International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-01-2024, Accepted: 19-02-2024, Published: 05-03-2024
Volume 10, Issue 1, 2024, Page No. 25-27

इक्कीसवीं सदी (2000–2020) के उपन्यासों में किसान जीवन का अध्ययन

इस्मारिका सिंह मौर्या[1], डा0 सन्तोष पाण्डेय[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय 'झांसी', उत्तर प्रदेश, भारत
[2] सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, वीरभूमि राजकीय महाविद्यालय, महोबा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
इक्कीसवीं सदी (2000–2020) के उपन्यासों में किसानों की आर्थिक एंव सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है । सामाजिक यथार्थ को प्रतिबिंबित करने का माध्यम रहे उपन्यासकारों ने अपने अनुभव एवं देश काल वातावरण का अध्ययन कर अपने उपन्यासों में किसान जीवन की समस्याओं, संघर्षो और विभिन्न परिस्थितियों को प्रमुखता से दिखाया है । 2000–2020 के बीच की अवधि में भारतीय समाज एवं अर्थव्यवस्था में महतवपूर्ण परिवर्तन हुए हैं ।इन दो दशक में एक तरफ जहॉ शहरीकरण और औद्योगिकी का विकास हुआ वहीं दूसरी तरफ किसानों की स्थिति चुनौतीपूर्ण रही । इस समय के हिन्दी उपन्यासों में भूमि संकट, सामाजिक भेदभाव, आर्थिक कठिनाइयों के साथ ही साथ किसानों की दयनीय स्थिति का भी वर्णन किया गया है ।हिन्दी उपन्यास न केवल किसानों की दुर्दशा को समझने का माध्यम बना अपितु उनके जीवन में हो रहे आर्थिक, सामाजिक एंव सांस्कृतिक बदलाव को भी प्रस्तुत किया । किसानों का जीवन प्रारम्भ से अंत तक अनेक झंझावातों से घिरा रहता है । परन्तु इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में किसानों की स्थिति में सुधार के लिए प्रखर शब्द दिखाई देते हैं । उनकी समस्यायों पर विस्तृत वर्णन देखने को मिलता है ।

मूल शब्दः उपन्यास, समाज, ग्रमीण, यथार्थ, किसान, आन्दोलन

हिन्दी साहित्य गद्य लेखन में उपन्यास एक ऐसी विद्या है जो जीवन के विषद एंव विस्तृत दर्पण को प्रस्तुत करती है । साहित्य के अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास का चित्र व्यापक होता है । अपनी व्यापकता और विस्तृतता के कारण ही उपन्यास किसानों के जीवन को वास्तविक रूप में चित्रित कर पाती है । इक्कीसवीं सदी (2000–2020) के कुछ प्रमुख किसान केन्द्रित उपन्यासों का अध्ययन इस शोध पत्र में प्रस्तुत है।

राजू शर्मा के उपन्यास 'हलफनामें' का अवलोकन करने पर हम देखते हैं कि यह उपन्यास अपने सामाजिक यथार्थ के कथावस्तु के संकलन के चलते कई मायनों में विशिष्ट हो जाता है। किसानों की आतमहत्या के प्रसंग पर लिखा गया उपन्यास 'हलफनामें' हिन्दी का पहला उपन्यास है । किसान आत्महत्याओ, सामाजिक विषमता, जल संकट तथा न्यायिक व्यवस्थाओं पर जहॉ किसी का भी ध्यान नहीं गया वहॉ यह उपन्यास 'हलफनामें' हमें इन सभी समस्याओं से रूबरू कराता है । जल की लगातार होती कमी ही इस उपन्यास की मूल समस्या है किसानों की आत्महत्या इसी समस्या से जुड़ी हुई है । साहित्य एंव समाज का घनिष्ट सम्बन्ध है । प्रत्येक साहित्य समाज में घटित घटनाओं और परिवर्तन को ही सूक्ष्मता के साथ चित्रित करता है । तुच्छ राजनैतिक दलों एवं राजनेताओं के गिरी हुई सोच और जनता की जानकारियों के अभाव के सम्बन्ध में कथित पंक्ति – ''गरीबी, भूख, रोग, झोपड़ पट्टी, विपदा और दमन बेरोजगारी और भुखमरी का होना जरूरी है क्योंकि इनके बिना वैभव और विलास का अगाध निर्माण असम्भव है ।''[1]

''भारतीय किसान समस्याओं के दलदल से घिरा हुआ है ।''[2]

कर्मेन्दु शिशिर के उपन्यास बहुत लम्बी राह में भुमण्डलीकरण ग्रामीण समाज पर पड़ रहे सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का वर्णन किया गया । भुमण्डलीकरण के कारण लोक संस्कृतियों का नष्ट होना तथा नई संस्कृति का बने रहना दिखाया गया है । नई संस्कृति के आने से सोच में हो रही नूतन परिवर्तन को वर्णित किया गया । इसमें सामन्ती वर्ग अपने गिरते हुए साम्राज्य को थामने का प्रयास करता है वहीं मजदूर वर्ग जिसे सामानती वर्ग की धूर्तता का पता है फिर भी वह गुलामी के कारण वह निकल नहीं सकता है । मजदूर वर्ग के लड़के को पता है किसान या मजदूर रहकर मुक्ति नहीं मिल सकती । वह विद्रोह के रास्ते का चयन करता है ।

शिवमूर्ति का उपन्यास 'आखिरी छलांग' सर्वप्रथम 'नया ज्ञानोदय' के जनवरी 2008 के अंक में पहली बार पूर्ण रूप से प्रकाशित हुआ । भुमण्डलीकरण के प्रभाव एंव भारतीय किसान की स्थिति को समझाने का प्रयास काफी हद तक इस उपन्यास में किया गया है । यह उपन्यास उस सन्दर्भ को दिखाता है जिसकी वजह से किसान आत्महन्ता बनने पर मजबूर हो रहा है । यह उपन्यास भुमण्डलीकरण के प्रभाव से भारतीय किसानों की स्थिति को ही केवल नहीं दिखाता बलकि स्थिति को विश्लेषण करने का प्रयास करता है । इस उपन्यास का मुख्य किरदार यह बखुबी जानता है कि भुमण्डलीकरण एवं बाजारवाद घातक है फिर भी उसके जाल में फंसता चला जाता है अन्त में आत्महत्या करने को बाध्य है । ''किसानी जीवन के दुख ओर दरिद्रता से मुक्ति का सपना देख रहे हो । यह सपना कभी पूरा नहीं होने वाला बच्चा । बिना मरे इस बैडंड से मुक्ति नहीं मिल सकती ।''[3]

संजीव के उपन्यास 'फांस' में विदर्भ के किसानों की दुर्दशा का चित्रण है । किसान आत्महत्या पर केन्द्रित यह हिन्दी साहित्य का पहला ऐसा उपन्यास है जिसमें किसान आत्महत्या सिलसिलेवार तरीके से चलती रहती है । किसान का जीवन स्तर मुश्किलों से घिरा हुआ है ।उसके पास बैल को खरीदनें के पैसे नहीं हैं वह स्वंय बैल बन जाता है । और हल जोतने लगता है । आधुनिक उपकरणों के न होना पूंजीपतियों तथा अमीरों के लिए फसल उगाने के लिए बाध्य होना एंव अपनी उगायी गयी फसल पर भी अधिकार न होना, उचित मुल्यों के न मिलने पर किसान खुद को ठगा सा समझता है । अपने आस–पास में होने वाली आत्महत्याओं के देख–सुन कर वह आर्थिक बदहाली को न झेल पाने के कारण आत्महत्या के विषय में सोचता है । हजार, दो हजार रूपए के लिए आज हजारों किसान आत्महत्या कर रहे हैं इस विडम्बना के पीछे का कारण व्यवस्था ही है । गाय और जमीन किसानों का बड़ा धन है । गाय के कारण 'गोदान' का होरी दम तोड़ता है और बैल के कारण 'फांस' के मोहन दादा । ''इस देश में किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही जीता है, कर्ज में ही मर जाता है''[4]

पंकज सुबीर के उपन्यास अकाल में उत्सव मौजूदा समय की बड़ी समस्या बाजारवाद की चकाचौध से खेती की होती तवहीनता और किसानों की आत्महत्यों से परिचित कराती है कठीन परिश्रम एंव मेहनत के बाद भी किसानों को क्या मिल फटे कपड़े तथा चेहरे पर झुर्रीया जिसे देख कर आज की पीढ़ि का किसानी से मोहभंग होने लगा । 'अकाल में उत्सव' नाम से ही पता चलता है एक तरफ अकाल है तो दुसरी तरफ उत्सव । दरअसल इस उपन्यास के दो पहलू हैं एक तरफ ध्रुव के प्रतिनिधि कलेक्टर श्री राम परिवार वहीं दूसरी तरफ ध्रुव के प्रतिनिधि रामप्रसाद हैं । इस उपन्यास की कथा दो समानान्तर कहानी में चलती है एक प्रशासन तो दूसरा ग्रामीण किसान यह गाँव एंव किसान जीवन के दुरूख दृदर्द को कहने वाली रचना है । इस उपन्यास में चित्रित गॉव का नाम सूखा पानी ! है । इस गाँव का नाम जितना अलग है यह गॉव भी उतना ही अलग है । ''छोटा किसान जब तक लड़ सकता है, तब तक किसान रहता है और फिर मजदूर बन जाता है।''[5]

सरकारी नीतियों के विषय में भी उपन्यास में चर्चा की गयी है किस प्रकार से सरकारी विकास की नीतिया गॉव में विकास की लहर को लेकर आती हैं और वह स्वयं नहीं आ पाती हैं – ''सरकारी व्यवस्था शेर के शिकार करने के समान होती है जब शेर अपने शिकार में से पेट भर लेता है तो बाकी का शिकार अपने से छोटे जानवरों मतलब गीदड़ों आदि के लिए छोड़ देता है गीदड़ भी जब पेट भर लेता है तो अपने से छोटे लकड़बघ्घों, गिद्धों आदि के लिए छोड़ देता है''[6]

कुल मिलाकर यह कहना तर्क संगत होगा जब ऊपर के लोग का पेट भर जाता है तभी नीचे के लोगों के लिए कुछ मिलता है ।

मिथिलेश्वर को उपन्यास 'तेरा संगी कोई नहीं' अकेले पड़ते किसानों की गाथा है । किसान उत्तर, दक्षिण, पूरब, पशचिम किसी भी तरफ के हो सभी किसानों की समस्याएँ लगभग एक सी हैं । यह उपन्यास कृषक जीवन तथा कृषक समाज में होने वाली खेती–किसानी की समस्याओं को अत्यन्त गूढ़ता से प्रदर्शित करता है । किसान जीवन की सबसे बड़ी समस्या कृषि की दिन प्रतिदिन हो रही उपेक्षिता एवं अनेकानेक अभावों के कारण किसान निरन्तर बोझ तले दबता चला जा रहा है । इस उपन्यास में कृषक जीवन की वास्तविक समस्याओं को न केवल दिखया गया है बलकि उसे जानने समझने का सार्थक प्रयास कर हमें रूबरू कराया गया है । खेत का बेचना बेटी को बेचने के समान है । इस उपन्यास के पात्र बलेसर का पुत्र कुलराखन ने खेत बेचने की बात कही तो गॉव में दबी जबान से चर्चा चल रही है जिसपर बलेसर की सोच दृ '' परम्परा से खेती से जुड़े किसानों द्वारा खेत बेचना, संगी–साथी किसानों की नजर में किसी चोरी, अपराध या बेटी बेचने जैसे कुकृत्य से कम नहीं समझा जाता ।''[7]

एम. एम. चन्द्रा के उपन्यास 'यह गांव बिकाऊ है' उपन्यास ग्रामीण जीवन व समाज की गतिशीलता की आत्मक है। 'यह गांव बिकाऊ है' में नंगला गांव की कथा है जो पूर्ण रूप से उदारीकृत एवं भूमण्डलीकृत गांव है। गांव बसता है गांव उजड़ता है गांव शहर की तरफ पलायन करता है बाद में फिर गांव की ओर मुड़ता है। यह 1990 के दशक के मजदूर आन्दोलन पर केंद्रित है। यह आधुनिक विकास की बलि पर चढ़े हुए गांव की कहानी है 'यह गांव बिकाऊ है' यह एक नारा बन जाता है। अघोघ इस उपन्यास का पात्र है, पिता एवं पुत्र अघोघ के माध्यम से नई पीढ़ी तथा पुरानी पीढ़ी और शिक्षा, अशिक्षा तथा गांव–शहर के बीच हो रहे संघर्ष को दिखाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है लेखक के विचारों का प्रतिनिधिकर्ता उपन्यास का पात्र अघोघ ही है। वह भगत सिंह के विचारों से सम्बन्ध रखता है तथा नए समाज का निर्माण करने का प्रयास करता है। जनता की भलाई के लिए जनपुस्तकालय को खोलने का प्रयास करता है। पुस्तकालय के माध्यम से जनता को किसान आंदोलन से जोड़ने के साथ ही साथ उनकी चेतना का विकास भी करना है। इस उपन्यास में किसान एवं मजदूरों के साथ स्त्रियों को भी समान अधिकार दिया गया है। स्त्रियां अगर खेती या किसानी कर सकती हैं तो किसान आंदोलन में भाग लेने का स्त्री का पूर्ण अधिकार है।

"यह गांव बिकाऊ है कि चिंता का केंद्र भूमिहीन किसान है जो एक समय खेतों में मजदूरी करता था, फिर औद्योगिक क्रांति के नारे के साथ शहर आकर मजदूर बना और फिर एक दिन मील बंद होने पर उसने गांव का रूख किया"[8]

रामधारी सिंह दिवाकर के उपन्यास 'दाखिल खारिज' में "हिंदी कथा साहित्य से लगभग बहिष्कृत होते गांव को विषय बनाकर लिखे गए इस सशक्त उपन्यास को 'कथा में गांव के पुनर्वास' के रूप में भी देखा–परखा जा सकता है।"[9]

गांव की निरंतर नष्ट होती समाजिक व्यवस्था से मानवीय मूल्यों में हो रहे कमी को अपने उपन्यास के माध्यम से कथान्वित किया है। "अपने टूटे हूए गांव के लिए कुछ करने के सपनों और संकल्पों के साथ प्रोफेसर प्रमोद सिंह का गांव लौटना और बेरहमी से उनको खारिज किया जाना आज के बदलते हुए गांव का निर्मम यथार्थ है।"[10]

एक ऐसा गांव जहां बलात्कार को सामान्य सी घटना माना जाता है। बलात्कारी, हत्यारे, दुराचारी बाहुबली व्यवस्था एवं सरकारी नीतियों के कारण अपने तरीके से चला रहे हैं। किसान खेती को छोड़कर मनरेगा या मजदूरी को करना ज्यादा बेहतर मानता है जिससे लोगों का पलायन भी हो रहा है। विखंडित एवं विकृत गांव की पीड़ा तथा ग्रामीण चेतना का वर्णन उपन्यास में किया गया है।

ज्ञानचंद बांगड़ी के उपन्यास 'आखिरी गांव' एक भारतीय गांव की आत्मीय गाथा है। यह कथा एक छोटे से गांव अहिरवाटी व ज्ञानी नाम के बच्चे की है जो लेखक स्वयं है। लेखक स्वयं बताता है इस उपन्यास का नाम आखिरी गांव रखने के पीछे भी कारण है क्योंकि यह गांव राजस्थान और हरियाणा का सीमा क्षेत्र का आखिरी गांव है। गांव की जीवनशैली, जाति–पाति, खेत–खलिहान, मौज मस्ती, मिलना–बिछुड़ना के साथ ही अर्थव्यवस्था इत्यादि मानवीय मूल्यों का वर्णन इस उपन्यास में देखने को मिलता है। यह उपन्यास केवल उपन्यास नहीं वरन गांव का पूरा समाजशास्त्र है। इस उपन्यास में कथा के साथ ही गांव की सामाजिक व्यवस्था का पूरा ध्यान रखा गया है जिससे पाठक को ग्रामीण समाज का समाजशास्त्रीय वर्णन देखने को मिलता है। लेखक ने अपने बचपन की यादों की छटा को इसमें उकेर कर रख दिया है। मुहावरें तथा आंचलिक शब्दों की प्रमुखता उपन्यास में निहित है "बेटियां मां के अंतर्मन को बेटों से ज्यादा जानती हैं। इसी प्रकार मां को भी बेटियों के व्यवहार का पूरा ज्ञान रहता है इसीलिए कहा जाता है कि बिना मां के बेटियां बिगड़ती हैं बिना बाप के बेटा।"[11] – ज्ञानचंद बांगड़ी लेखक को गांव तथा गांव में होनेवाले ग्रामीण चाल–चलनों का गहरा ज्ञान, अनुभव है।

रणेन्द्र का उपन्यास 'ग्लोबल गांव का देवता' भूमंडलीकरण का ग्रामीण समाज पर पड़ रहा प्रभाव तथा इसी के प्रकोप से ग्रामीण समाज की नष्ट होती खुशियों का वर्णन है। इस उपन्यास में आदिवासी तथा वनजीवियों के जीवन, आदिवासी समुदाय की समस्या तथा अंधविश्वास, आदिवासी महिलाओं की स्थिति तथा आदिवासी समाज में हो रहे विकास कार्य की वास्तविक सच्चाई का आदिवासी समाज की संवेदनाओं के साथ प्रमाणिकता का वर्णन किया गया है। "'ग्लोबल गांव का देवता' असुर समुदाय के अनवरत जीवन संघर्ष का दस्तावेज है। देवराज इन्द्र से लेकर गलोबल गांव के व्यापारियों तक फैली शोषण की प्रक्रिया को उजागर कर सके।"[12]

रणेन्द्र ने अपनी कथा को कहने के लिए अत्यंत सुंदर और सरल शब्द चुने हैं क्योंकि कथा का प्रभाव यदि इतना मजबूत एवं मर्म हो तो बात को कहने के लिए शब्दों में किसी भी जादू की जरूरत नहीं होती है।

शोध का उद्देश्य

1. इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों के माध्यम से किसान जीवन की वास्तविकता को उजागर करना।
2. गांव का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना।
3. किसानों की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालना।
4. किसान आत्महत्या के कारण को जानना।
5. किसानों के पलायन का कारण।
6. महिला किसानों की स्थिति का वर्णन।
7. भूमंडलीकरण का ग्रामीण एवं कृषक समाज पर प्रभाव।
8. कृषि महत्ता पर प्रकाश डालना।

निष्कर्ष

इस बात को कतई झूठलाया नहीं जा सकता है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है फिर भी खेती एवं किसानी को कभी प्रथम दर्जा नहीं मिल पा रहा है उसे हमेशा दोयम दर्जे में रखा जा रहा है। नवीन तकनीकिक अभाव के कारण किसानों की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं नजर आ रहा है बल्कि किसान और भी अधिक परेशान दिखाई दे रहा है। समय एवं स्थिति का ऐसा प्रकोप छा गया है कि आज किसान किसानी करने से ज्यादा अच्छा मजदूरी या मनरेगा को करना समझता है। भूमंडलीकरण के मार को न सह पाने के कारण आत्महत्या जैसे कठिन रास्ते अब किसानों को सीधे और सरल से लगने लगें हैं जिससे उसे इन सब मारों से मुक्ति मिल जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हलफनामें, राजू शर्मा, सेतु प्रकाशन, नई दिल्ली
2. हलफनामें, राजू शर्मा, सेतु प्रकाशन, नई दिल्ली
3. आखिरी छलांग, शिवमूर्ति, नयाज्ञानोदय, जनवरी 2008
4. फांस, संजीव, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली
5. अकाल में उत्सव, पंकज सुबीर, शिवना प्रकाशन, नई दिल्ली
6. अकाल में उत्सव, पंकज सुबीर, शिवना प्रकाशन, नई दिल्ली
7. तेरा संगी कोई नहीं, मिथिलेश्वर, लोकभारती, प्रयागराज
8. यह गांव बिकाऊ है, एम. एम. चन्द्रा, डायमण्ड बुक्स
9. दाखिल खारिज, रामधारी सिंह 'दिवाकर', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
10. दाखिल खारिज, रामधारी सिंह 'दिवाकर', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. आख़िरी गॉव, ज्ञानचन्द बागडी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
12. ग्लोबल गांव का देवता, रणेन्द्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली